THE SCIENCE WORLD
A Monthly e Magazine

Popular Article

August, 2022; 2(8), 1451-1452
https://doi.org/10.5281/zenodo.7014693

सत्यानाशी : विषैले तथा औषधीय प्रभाव

सत्यानाशी प्रमुख रूप से वन्य क्षैत्रो व सड़क के किनारे पाया जाता हैं। यह वनस्पति मुख्य रूप से खरपतवार के रूप में उत्पन्न होती हैं। यह पेपेवरेसी फेमिली से तालुक रखता हैं। यह खरपतवार कई नामों से जानी जाती हैं, जैसे : उजर कांटा, सियाल कांटा, प्रिकली पॉपी, मैक्सिकन पॉपी, कारडोसन्टो, बरमदंडी, स्वर्णक्षिरी, भड़भांड़, अगारा आदि। यह खरपतवार किसानो में खुजली उत्पन्न करती हैं। सत्यानाशी का फल चौकोर, कांटेदार व प्याले जैसा होता हैं। पत्तिया थोडी लोब्ड, मोटी, कांटेदार व फूल पीले चमकीले नारंगी रंग के होते हैं। इनके बीज राई के समान छोटे, गोल, काले–भूरे रंग के होते हैं। बीज दहकते कोयलो पर डालने से भड़भड़ बोलते हैं। उतर प्रदेश में इसे भड़भांड़ कहते हैं। सत्यानाशी के किसी भी भाग को तोड़ने पर सोने जैसा पीला रंग का दूध निकलता हैं, इसलिए इसे स्वर्णक्षीरी भी कहते हैं।

सत्यानाशी : तना, पत्तिया, कांटे, फल, पुष्प व बीज

सत्यानाशी : पुष्प

सत्यानाशी : सूखा पुष्प व बीज

सत्यानाशी : विषैले प्रभाव

सत्यानाशी गेहूं, सरसो, मेथी, ग्वार, टमाटर व खीरे की फसल पर बुरा प्रभाव डालता हैं। सत्यानाशी के सबसे ज्यादा विषैले पदार्थ सीनेमीक तथा बेन्जोइक अम्ल होते हैं, जो कि अंकुरण की शक्ति को कम कर देते हैं। सत्यानाशी पशुओ के लिये हानिकारक होता हैं। सत्यानाशी के बीजो से निकलने वाले तेल में Sanguinarine व Dehydrosanguinarine नामक Isoquinoline Alkaloid तथा सत्यानाशी पौधे में Berberine व Protopine नामक Alkaloid पाये जाते हैं। सत्यानाशी के राई के समान जहरीले बीजो को सरसो में मिलाकर इसके तेल का उपयोग करने से महामारी एपिडेमिक ड्रॉप्सी हो जाती हैं। एपिडेमिक ड्रॉप्सी का सर्वप्रथम प्रकोप सन् 1877 में भारत के कोलकोता में देखा गया। इसमें बुखार, पेट की पेरिटोनियम में पानी भरना, जठरांत्रशोथ, शरीर में दर्द, त्वचा में सुई चुभने जैसी पीड़ा होती हैं। मनुष्यो में इडिमा, ग्लुकोमा, अन्धापन, कार्डियोपेथी व कभी – कभी इससे मृत्यु भी हो जाती हैं, क्योकि यह पित्ताशय, गुर्दे, यकृत, ह्रदय तथा श्वसन तंत्र पर हानिकारक प्रभाव डालता हैं। सत्यानाशी के बीज पॉल्ट्री में अण्डो का कम उत्पादन, इडिमा, अवसाद, एटेक्सिया, कलंगी में सायनोसिस, हीमोरेजिक जठरांत्रशोथ व मृत्यु करता हैं।

सत्यानाशी : औषधीय प्रभाव

1. सत्यानाशी का सम्पूर्ण ताजा या सूखा पादप Biodiesel, Laxative, गुर्दे में दर्द, मलेरिया, पीलिया, पुराने घाव, त्वचा रोग (दाद, खाज, खुजली), कुष्ठ रोग, बांझपन आदि के उपचार में किया जाता हैं।
2. इसके पत्ते का रस का दुध रक्त स्कंदक, कीटाणुनाशक व विषाणुनाशक होता हैं।
3. इसके दुध का उपयोग मोतियाबिन्द, रतौंधी, आंखो की सुजन, नैत्र विकार, खांसी, कफ, दमा, श्वास रोग, पेट दर्द, मूत्र विकार, सिफलिस, सुजाक आदि रोगो के उपचार में किया जाता हैं।
4. इसका तेल जलोदर व कुष्ठ रोग के उपचार में किया जाता हैं।
5. इसके पीसे हुए फूल व दुध का उपयोग सफेद दाग के उपचार में किया जाता हैं।

डॉ. अनिता राठौड., डॉ. ललित कुमार, डॉ. अभिषेक चौधरी और डॉ. राहुल सोनी

पशु औषध एवं विष विज्ञान विभाग

पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया, उदयपुर